© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

मृगांकदूतम् में प्रकृति वर्णन

डॉ राजदेव मिश्र
ग्रा– मलमलिया
पो– बाँक बाजार
जनपद–बलरामपुर

मृगांकदूतम् दूतकाव्य के पूर्व मृगांक में कवि ने प्रकृति का बड़ा ही मनोरम दृश्य प्रस्तुत किया है। इन्होनें प्रकृति को अनेक रूपों में चित्रित किया है। उनके अनुसार प्रकृति मानव की चिरन्तन सहचरी तथा उसके स्वरूप, सरस एवं भौतिक जीवन के लिए अपरिहार्य है यद्यपि कवि को प्रकृति का कोमल रूप ही अधिक प्रिय है, यदि कवि को प्रकृति का सूक्ष्म दृष्टा कहा जाय तो अतिश्योक्ति न होगी।

कवि जब डेनपसार नगरी (इण्डोनेशिया) में पहुँचता है तो वह नगरी मानों अपनी कमर में समुद्र रूपी करधनी से शोभायमान है। केले के घार के भार से अवलम्बित कदली कुञ्जों से परिपूर्ण, नारियल के वृक्षों से घिरी हुई, मार्कण्डेय आदि ऋषिमुनियों से परम चिन्मयी, अत्यधिक पवित्र, विश्वसनीय दृश्यमान होती है, जहाँ महाकाल शिव स्वयं पृथ्वी पर थिरक–थिरक कर लीला करते हैं। उस नगरी की प्रकृति को देखकर कवि आनन्द की अनुभूति में मगन होकर अत्यन्त हर्षित हो उठा।[१]

उस डेनपसार की नगरी में सम्पूर्ण गलियों में पैदम की घूम–घूम कर कवि ने मधुर प्रकृति की उस सुन्दरता को खुली दृष्टि से देखा। उन्होंने राजमहल मन्दिर गृह उपवन से भरी–पुरी समृद्ध बाजारों, चारों तरफ फैले हुए गन्ने के खेतों को अपने नेत्रों से देखा और अधिक क्या कहा जाय वह कविवर उस राजधानी की प्रकृति को देखकर उत्कण्ठित होकर आत्मविभोर हो गया।[२]

उस नगरी में सागर की चंचल तथा गगन चुम्बी लहरें अत्यन्त स्वच्छ है जो उस नगरी के चरण को धो रही है।[3]

डेनपसार नगरी पर प्रकृति अत्यन्त मेहरबान है। वहाँ प्रतिदिन बादल अपने अमृतमय जल की बूंदों को दिन भर बरसाते है। सड़क के दायें बायें स्थित वृक्षों की पंक्तियाँ संतप्त मानव शरीर को शीतलता प्रदान कर सेवा भाव को सार्थक करती है।[4]

उस नगरी में कटहल, केला, आम, नारियल, के वृक्ष हैं, सुन्दर खाद्यान्न हैं, अत्यन्त सुन्दर एवं मधुर फल विद्यमान हैं मतवाले कोयलों की कूंजन से, प्रातः कालीन मुर्गों की बाँगों से शोभयमान बाली द्वीप रत्न की यह डेनपसार नगरी सागर के जल से विभाजित कर दी गयी भारत की ही एक श्रृखला के समान प्रतीत होती है।[5]

कवि प्रकृति का अत्यन्त प्रेमी है। वह अपने मातृभूमि भारत की विशेषता को बतलाता है, और कहता है, ऊँचे शिखर वाला हिमालय जिसकी सफेद पगड़ी है, नदियों एवं झीलों का देश कश्मीर जिसका शीश है ममता भरे ह्रदय वाला विन्ध्य जिसका वृक्ष है, जहां तीर्थो का स्वामी प्रयाग स्थित है, घर्घर की ध्वनि वाला सिन्धु नदी एवं उत्कट जल के वेग वाली ब्रहापुत्र नदी जिसकों दोनों भुजाओं के समान है[6] उस भारत देश में प्रकृति की अनुपम छटा ही दृश्यमान होती है, जिससे गंगा, गोदावरी, यमुना, चेनाब, झेलम, नर्मदा, शिप्रा, कावेरी, तुगभद्रा और कृष्णा जैसी नदियाँ मानव के शरीर में सदैव शुद्ध रक्त प्रवाहित करती है।

कवि ने भारत देश की प्रकृति का बड़ी ही अनोखा एवं अद्भुत चित्रण किया है। वहाँ उगता सूरज किरणों के द्वार सम्पूर्ण पृथ्वी पर सोना बिखेर देता है तो चाँदनी रात अपनी चाँदी की चादर से पूरी धरती को ही ढँक लेती है। जहाँ भोर होते ही हरी–हरी घास के अंकुर ओस की बूंदों के द्वारा मोतियों की लड़ी पहन लेते हैं ऐसी भारत भूमि विश्व में विजयी है जिसकी देवता भी कामना करते हैं।[7]

ऐसे देश में ऋतुओं का समूह बारी–बारी वहां के लोगों का मनोरंजन करता है। थकान देखते ही हवा वृक्षों के पत्तों से पंखा झलने लगती है नहलाने को उत्कण्ठित होकर सागर भी जिस देश की चाकरी करता है।[8]

कवि ने देश की मनोरम प्रकृति के अद्भूत सौन्दर्य का वर्णन किया है जो अत्यन्त ह्रदयकारी है। वह भारत भूमि पावस में नीले मेघों की वर्षा के जल बिन्दुओं की सरस फुहारों से नित्य स्नान करती है। शरद और शिशिर के बीच वह शीत से अभिभूत रहती है। ग्रीष्म ऋतु में सूर्य की किरणों के अग्निदाही थपेडों से जल भुन कर सन्ततियों की रक्षा करने के लिए पूरे वर्ष भर तप करती है।[9]

कवि ने चाँद को कुमुदिनियों का प्रियतम माना है। मृगांकदूतम् में कवि ने मृगांक को दूत बनाकर प्रकृति की अद्भुत लीला को प्रस्तुत किया है। जब चाँद उदित होता है तो उस सौम्य चन्द्र को देख–देख कर कवि की जड़ता समाप्त हो जाती है।[10]

अन्त में कवि ने सुमात्रा के सघन वनों का चित्रण किया है जहाँ सिंहिनी के साथ प्रणय के उन्माद में मतवाले सिंहों की दहाड़ सुनाई देती है, जंगली सूअर विश्राम करते हुए दिखाई देते हैं और विषैले साँप कुण्डली मार कर बैठे रहते है।[11] ऐसे जंगलों का भी वर्णन कवि ने प्रकृति के अन्तर्गत किया है।

कवि ने प्रकृति का बड़ा ही रम्य दृश्य प्रस्तुत किया है। कवि प्रकृति प्रेमी है इसलिए प्रकृति का सूक्ष्म वर्णन करने की कला में निपुण है। प्रकृति का कोमल रूप अधिक चित्रित किया गया है। अपेक्षा कृत भयंकर रूप का चित्रण कम मिलता है।

कवि ने उत्तरमृगांक में प्रकृति का संक्षिप्त वर्णन किया है परन्तु जितना भी वर्णित है वह ह्रदयहारी एवं अभिनव है।

दक्षिण भारत में चन्द्रमा अपनी शीतल किरणों से नारियल के बन में कही छाया कहीं रोशनी डालता है। पशु और नर की आकृतियाँ अर्थात परछाई बनाता है। यह प्रकृति की अद्भुत लीला है।[12]

जगन्नाथ पुरी में कोणार्क का सूर्य मन्दिर है जिसके पास में ही विस्तृत बालू भरे समुद्र के शान्त किनारे प्रकृति की अनुपम छँटा को बिखेरते है।[13]

कवि ने दुधवा नामक जंगल का वर्णन किया है। जहाँ अनेक प्रकार के वन्य जीव विचरण करते है।[14] हिमालय पर्वत के उच्च शिखर पर आरूढ़ होकर चन्द्रमा मान सरोवर के जलरूपी दर्पण में अपनी छवि को देखता है। तथा रावी और झेलम नदियों के आलिंगन में बंधी हुई कश्मीर की धरती का अवलोकन करता है।[15]

गोरखपुर से आगे बढ़ने पर गोमती नदी के तट पर बसे हुए नगर (सम्भवतः लखनऊ) का वर्णन भी यहाँ उल्लेखनीय है जहाँ से सर्वगन्धा नामक पत्रिका प्रकाशित होती है।[16]

उज्जयिनी में महाकाल के मन्दिर का विस्तृत वर्णन है। वहीं शिप्रा नदी से उठने वाली स्पर्श सुखद वायु का भी उल्लेख किया गया है। जिसकी प्रशंसा कालिदास ने मेघदूत में अपने ढंग से की है।[17]

इसके अतिरिक्त कवि ने अनेक स्थानों पर प्रकृति का अप्रस्तुत रूप से वर्णन किया है जो हृदयहारी है जैसे– हे मुगांक! प्रो0 श्री निवास रथ महोदय से मेरा सन्देश इस प्रकार कहना– " जो मृगशावक आपके काव्योपवन के चरागाह में सदा स्वच्छन्द विचरण किया करता था और चौकड़ी भरता रहता था तथा लवली लता के समान कोमल जिस मृगशावक को अपने मुटठी भर–भर कर श्यामक खिला कर पाला पोसा था। वहीं मृगशावक (राजेन्द्र मिश्र) आज बड़ा होकर अपने जत्थे से बिछड़ गया है और दूर देश में जा पहुँचा है उसकी इस दशा को देखकर आप शान्त कैसे बैठे हैं आपका हृदय वज्र की तरह कठोर हो गया है।[18]

प्रयाग में दक्षिण मुख की ओर अत्यन्त उज्जवल जल वाली गंगा नदी बहती है जो महावेग से पहुँच कर पूर्व मुखी यमुना को अपने अंक में भर लेती है।[19]

इस प्रकार उत्तरमृगाङ्क. में प्रकृति के विषय में कवि ने संक्षेप में वर्णन किया है कवि प्रकृति प्रेमी है उन्होंने प्रकृति का सजीव वर्णन किया है।

संदर्भ ग्रन्थ

१. द्रष्टव्य– पूर्वमृगांक– ३

२. द्रष्टव्य– पूर्वमृगांक.– ४

३. द्रष्टव्य– पूर्वमृगांक– ५

४. द्रष्टव्य– पूर्वमृगांक– ६

५ वही–

६ वही–

७ वही–

६ वही–

10. वही–

11. द्रष्टव्य– पूर्वमृगांक– ३७ तुलनीय कुमारसम्भवम् (७/६३)

अङ्गुलीभिरेव केशसंचयं संनिगृह्य च तिमिरमरीचिः कुड्मलीकृतसरोजलोचनं चुम्बतीव रजनी मुखं शशी।

१२. द्रष्टव्य– पूर्वमृगांक–५३

१३. द्रष्टव्य– पूर्वमृगांक––४

१४. द्रष्टव्य– पूर्वमृगांक–२४

१५. द्रष्टव्य– पूर्वमृगांक–३२

१६. द्रष्टव्य– पूर्वमृगांक–३०

१७. द्रष्टव्य– पूर्वमृगांक–५३

"दीर्घीकुर्वन्पटु मदकलं कूजितं सारसानां
प्रत्यूषेषु स्फुटित कमलामोदमैत्री कषायः।
यत्र स्त्रीणां हरति सुरतग्लानिमङ्गानुकूलः।
शिप्रावातः प्रियतम इव प्रार्थना चाटुकारः।।"

१8. द्रष्टव्य– उत्तरमृगांक– ५६ तुलनीय– अभिज्ञान शाकुन्तल (४/१४)

यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनां
तैलं न्यषिच्यत मुखे कुशसूचिविद्धे।
श्यामाकमुष्टिपरिवर्द्धितको जहाति
सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते।।

१६. द्रष्टव्य– उत्तरमृगांक– ६४